Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on - **निम्न पुरापाषाण कालीन विशेषताएं।**

(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)

निम्न पुरापाषाण कालीन विशेषताएं।

निम्न पुरा पाषाण काल

मानव द्वारा निर्मित प्राचीनतम उपकरण हमें इस काल में प्राप्त होते हैं, जब मानव ने सर्वप्रथम पत्थर का स्वयं फलकीकरण कर अपनी आवश्यकतानुसार औजार बनाए। प्राचीनतम औजार वे हैं जिनमें पैबुॅल (Pebble) के एकतरफ फलक उतार कर चापर औजार बनाए गए। ये प्राचीन उपकरण हमें सर्वप्रथम मोरोक्को तथा मध्य अफ्रीका में ओल्डुवई गर्ज के सबसे प्रथम तह से प्राप्त होते है। प्रथम स्थान पर इनके साथ विल्लफ्रैन्चिय (Villafranchian) प्रकार के पशुओं की हड्डियाँ भी मिलती है, जो नूतनकाल (Plestocene) से पहले काल के जानवर थे जो अभी भी बचे रह गए थे। इनमें बड़े-बड़े दांतो वाले हाथी (Tusks), बड़े -बड़े नुकीले दांतो वाले चीते, लकड़बग्घा इत्यादि शामिल थे। इस काल में मानव भोजन के लिए शिकार करता था। मानव ने मध्य और अभिनूतन काल में चापर और चापिंग औजारों का निर्माण

किया, इसमें चॉपर में एक तरफ से फलकीकरण करके औजार बनाए गए। इन्हीं औजारों से बाद में प्राग् हस्त कुठारों का निर्माण किया गया और कालान्तर में इन्हीं से सुन्दर हस्त कुल्हाडियां निर्मित हुई।

निम्न पुरा पाषाण काल में औजार बनाने की तकनीक :-

(Block -on-Anvil Technique):इस विधि द्वारा जिस पत्थर द्वारा औजार का निर्माण करना होता था उसे किसी चट्टान पर प्रहार करके उसका फलक उतारकर औजार बनाये जाते थे। इस विधि द्वारा बड़े आकार के तथा अनघड़ औजारों का ही निर्माण संभव था।

Stone Hammer Technique or Block-on-Block Technique: पूर्वपाषाण काल में मानव द्वारा औजार बनाने की सर्वाधिक प्रयोग में लाई जाने वाली विधि थी। इसमें जिस पत्थर का औजार बनाना होता था उसे एक स्थान पर रखकर दूसरे हाथ से एक अन्य पत्थर द्वारा चोट करके फलक उतार कर औजार बनाया जाता था। इस विधि द्वारा मानव bi-ficial (द्विधारी) औजार भी बना सकता था।

Step Flacking Techinique: इस तकनीक द्वारा जिस पत्थर का औजार बनाना होता था उस पर दूसरा पत्थर मारते समय जिस प्रकार का औजार बनाना था, उसे ध्यान में रखकर सर्वप्रथम मध्य भाग मे चोट कर उस पत्थर पर एक निशान बना लिया जाता था। बाद में उसी की मदद से Steps (पट्टियों) में फलक उतार कर औजार बनाए जाते थे। इस विधि द्वारा हस्त कुल्हाडियों का निर्माण किया जा सकता था।

Cylinderical Hammer Technique: इस विधि द्वारा पत्थर का औजार बनाने के लिए एक सिलैंडरनुमा हथौडे का प्रयोग किया जाता था जिससे कि छोटे-छोटे फलक भी उतारे जा सकते थे। इनसे सुन्दर एशुलियन प्रकार की हस्त कुल्हाड़ियां बनाई जाती थी।

निम्न पुरा पाषाण काल में औजार

इस काल का मानव कोर (Core) निर्मित औजारों का प्रयोग करता था यानि जिस पत्थर का औजार बनता था उसके फलक (Flake) उतार कर फैंक दिए जाते थे तथा बीच के हिस्से का ही औजार बनता था। इस काल के बने उपकरणों में chapper/ chapping tools

(चॉपर/चौंपिग औजार), Hand-axes (हस्त कुल्हाड़ियो), Cleavers (विदारणी), Scrappers (खुरचमियां) इत्यादि प्रमुख थे। इनसे मानव काटने, खाल साफ करने इत्यादि कार्यो के लिए तथा मिट्टी से जड़ें और कन्दमूल आदि निकालने के काम में लाता था।

निम्न पुरा पाषाण काल का विस्तार क्षेत्र

इस काल के मानव के प्राचीनतम उपकरण हमें सर्वप्रथम अफ्रीका से प्राप्त हुए। यहां मध्य-पूर्वी अफ्रीका के ओल्डुवई गर्ज की प्रथम तह से ये औजार मिले हैं। इसके अलावा मोरोक्को से भी इनकी प्राप्ति हुई है। यूरोप के लगभग समस्त देशों से ये उपकरण मिले हैं, इनमें फ्रांस के सोम घाटी में स्थित अब्बेविल (Abbeville) जहां से हस्तकुल्हाड़ियों की प्राप्ति हुई। इंग्लैड में थेमस नदी पर स्थित स्वान्सकोम्ब (Swanscombe) फ्रांस का अमीन्स (Amiens), जर्मनी का स्टेनहीम (Steinheim), हंगरी के वर्टिजोलुस गुफा प्रमुख है। एशिया में साइबेरिया को छोड़कर सभी प्रदेशों से इन उपकरणों की प्राप्ति हुई है। चीन में बीजिंग के समीप झाऊ-तेन गुफा में तो उस काल के मानव के उपकरण तथा आग के प्रमाण मिले हैं। भारत

उपमहाद्वीप में पाकिस्तान के सोहनघाटी, दक्षिण भारत में तमिलनाडू के साथ-साथ समस्त भारत से इस प्रकार के उपकरण प्राप्त हुए है। दक्षिण-पूर्वी ऐशिया में महत्वपूर्ण है जावा, जहाँ से इस काल के मानव के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

निम्न पुरा पाषाण काल के मानव

विभिन्न स्थलों से हमें इस काल के मानव के भी अवशेष प्राप्त हुए हैं, जो इस संस्कृति के जन्मदाता भी थे। ओलॅडुवई गर्ज की प्रथम तह से Anstralopithicus मानव के, चीन की आऊ-काऊ तेन गुफा से Sinauthropithicus तथा इसी प्रकार जावा से भी Pithicanthropas प्रजाति के मानव के अवशेष, दक्षिण अफ्रीका से स्टेर्कफॉनटीन (Sterkfontein) नामक स्थान से भी Australopithicus मानव के प्रमाण मिले है। इस काल के मानव की कपाल क्षमता 750 घन से0मी0 थी तथा कहीं-कहीं इससे भी अधिक।

निम्न पुरा पाषाण काल में जीवन

इस काल के मानव का निवास स्थल नदी घाटियाँ

शिलाश्रय तथा गुफा इत्यादि थे। स्टुअर्ट पिंगट के अनुसार इस युग के मानव के जीवन का आधार शिकार करना तथा भोजन एकित्रात करना था, इनका जीवन अस्थायी और खतरों से भरा एवम् अलग-अलग था। इस काल का मानव उपकरणों की सहायता से जंगली जानवरों का शिकार करता था। भोजन के तौर पर उनका मांस कच्चा था कई स्थानों पर पकाने के भी प्रमाण हैं। इसके अतिरिक्त कन्दमूल, जंगली फल तथा खाने वाली जड़े भी उसके भोजन में शामिल था। इस काल का मानव विलेचैम्यियन प्रकार के पशुओं के अलावा हाथी, गैंडा, घोडा, पानी की भैस, बारहसिंगे, कछुए, मछली, पक्षी, मेंढक, कई प्रकार के मगरमच्छ इत्यादि का शिकार करता था।

निम्न पुरा पाषाण काल का उद्भव एंव तिथिक्रम

तिथिक्रम के हिसाब से मानव के अवशेषों को मध्यअभिनूतन काल में रखा जा सकता है। ये अवशेष द्वितीय इन्टर ग्लेशियल काल या इससे भी प्राचीन काल के हैं। जिन्हें हम कम से कम पाँच लाख वर्ष से 1,25000 लाख वर्ष के बीच निर्धारित कर सकते हैं।

पूर्वपाषाकालीन संस्कृति का प्रांरभ अफ्रीका में ओल्डुवई गर्ज तथा मोरोक्को से देखने को मिलता है यहीं से इस काल के मानव में विभिन्न क्षेत्रों मे जाकर इस संस्कृति का विकास किया। कुछ विद्वानों का मत है कि इस काल में अफ्रीका भारत से जुड़ा हुआ था, इसलिए इस काल का मानव स्थल मार्ग से भारत पहुँचा। परन्तु महाद्वीप तो इस काल से बहुत पहले ही अलग हो चुके थे। इस प्रकार वह उत्तरी अफ्रीका से होता हुआ मांऊट कार्मल के रास्ते एक शाखा यूरोप मे उत्तर की ओर चली गई तथा दूसरी पूर्व होती हुई भारत तथा दक्षिणी पूर्व एशिया की ओर गई तथा वहां इस संस्कृति का विकास किया।

References: Internet & Competitive books.